ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(8): 418-421
www.allresearchjournal.com
Received: 21-05-2015
Accepted: 24-06-2015

यशपाल
पी एच डी रिसर्च स्कॉलर
सेंटर फॉर कम्पेरेटिव लिटरेचर (तुलनात्मक साहित्य) स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेए लिटरेचर एंड कल्चर पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय बठिंडा.151001 (भारत)

Correspondence:
यशपाल
पी एच डी रिसर्च स्कॉलर
सेंटर फॉर कम्पेरेटिव लिटरेचर (तुलनात्मक साहित्य) स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेए लिटरेचर एंड कल्चर पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय बठिंडा.151001 (भारत)

पर्यावरण सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में कालिदास के "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" का आलोचनात्मक अध्ययन

यशपाल

पर्यावरण (Ecocriticism) दो शब्दों से मिलकर बना हैं, 'इको' और 'क्रिटिसिज्म' इको का अर्थ 'पूरा संसार' तथा क्रिटिसिज्म का अर्थ 'अध्ययन'। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ प्रकृति का अध्ययन करना है। प्रकृति- मानव, जीव-जगत, पेड़-पोधें, फल-फूल, जीव-जन्तु आदि का संचालन करती है। अन्य शब्दों में इस प्रकार कह सकते है कि पर्यावरण और साहित्य के बीच का आपसी संबंध ही पर्यावरण कहलाता हैं।

पर्यावरण अंत: अनुशासन (Interdisciplinary) के रूप में एक नया सिद्धांत हैं, जो अन्य सिद्धांतो जैसे- इतिहास, मनोविजान, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, तथा पर्यावरण इतिहास इत्यादि के दवारा प्रभावित हुआ है। यह सिद्धांत 1970 के दशक में आया था तथा 1990 में इसे एक प्रशाशनिक ढंग से संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थापित किया गया। 1990 के बाद इसकी अन्य शाखायें यूके, जापान, कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, भारत, ताइवान, कनाडा तथा यूरोप में स्थापित की गई। (गेरेड ४) जिसका मुख्य केंद्र बिंदु मानव व प्रकृति के आपसी संबंधों से था। इस पर्यावरण (Ecocriticism) शब्द को सबसे पहले "विलियम रुकरैत" ने 1978 में अपने एक प्रकाशित-पत्र "लिटरेचर एण्ड इकोलॉजी: अन एक्सपेरिमेंट इन इकोक्रिटिसिज्म" के ***द्वारा*** परिभाषित किया। इस प्रकार मानव एवं पर्यावरण के बीच आपसी संबंध का विषय साहित्य का मुख्य उद्देश्य बना। ग्लोटफेल्ती (Glotfelty) ने अपनी पुस्तक "दा इकोक्रिटिसिज्म रीडर: लैंडमार्क्स इन लिटरेरी इकोलॉजी" में "इकोक्रिटिसिज्म" को परिभाषित करते हुए कहा है, "ecocriticism is the study of the relationship between literature and the physical environment" (XIX). इसी प्रकार एक अन्य विद्वान लॉरेन्स बुल ने कहा, "ecocriticism…as a study of the relationship between literature and the environment conducted in a spirit of commitment to environmentalist praxis" (430). उपरोक्त परिभाषाओ से यही स्पष्ट होता है कि मानव व प्रकृति का गहन अध्ययन करना ही इस सिद्धांत का विशिष्ट उद्देश्य है।

पर्यावरण सिद्धांत प्रकृति के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए उसके अधिकारों की रक्षा करता है तथा इसकी एक बेहतर समझ भी प्रदान करता है। प्रकृति और मनुष्य का संबंध शुरू से ही हमारे धार्मिक ग्रंथों जैसे, वेद, पुराण, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि में देखने को मिलता है। वेदो में प्रकृति को पूजनीय स्थान मिला है और कहा भी गया है, "वृक्षेभ्यो हरिकेशभ्यश्च नमो नम:"। (ऋगवेद) इसी प्रकार अथर्ववेद् में भी लिखा है, "माता पृथिवी पुत्रोअहं पृथिव्या:" ।(अथर्ववेद् १.१२/१२) इस प्रकार के आधारभूत ग्रंथों से स्पष्ट होता है कि प्रकृति और मनुष्य का संबंध हमारे प्राचीन ग्रंथो में अत्यंत ही सराहनीय रहा है तथा प्रकृति की पुत्री शंकुतला (अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की) का भी चर्तुथ अंक में स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें वह वृक्षों को बिना सींचे खुद पानी तक नही पीती है। और उन वृक्षों की सेवा करना ही अपना परम धर्म समझती है। इस प्रकार यह पर्यावरण सिद्धांत भी प्रकृति तथा प्रकृति के दवारा प्राप्त वस्तुओ को बचाने के सिद्धांतो का मूल्यांकन करने हेतु विभिन्न प्रकार के विद्वानो तथा शोधार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। विभिन्न प्रकार के विद्वानो जैसे लॉरेंस बुल, गेलैन ए. लव, उरुशला के. हेज, डेविड टेलर, थॉमस के डीन, विलियम रुकरेट, साइमन सी. एस्टोक आदि ने इस सिद्धांत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा इन्होने प्रकृति, समाज, मनुष्य, संस्कृति, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु आदि के अध्ययन की अवधारणाओं पर भी विशेष बल दिया है।

"अभिज्ञानशाकुन्तलम्" नाटक की रचना करने वाले संस्कृत साहित्य के महान कवि "महाकवि कालिदास" राजा विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्नों में एक थे। प्रकृतिवादी कवियों में जो स्थान विलियम वर्ड्सवर्थ, जॉन कीट्स, लोड बायरन इत्यादि को प्राप्त था। वही स्थान विश्व के साहित्य में कालिदास को प्राप्त था। अर्थात कालिदास ने अपने सभी काव्यों की रचना प्रकृति एवं पर्यावरण को आधार बनाकर की है, क्योंकि उनकी रचनाएँ वेद, पुराण, उपनिषद्, तथा दर्शन पर आधारित है, जिनमे प्रकृति और पर्यावरण का भरपूर चित्र देखने को मिलता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि कालिदास प्रकृतिवादी कवि है, जिनकी रचनाओं में पर्वत, फूल-फल, वृक्ष, जड़ी-बूटियाँ, नदियाँ, तालाब, पशु-पक्षी आदि का विशिष्ट विवरण देखने को मिलता है। उनके बारे में कोई विस्तृत जानकारी (जैसे उनका जन्म-स्थान, परिचय, माँ-बाप एवं अन्य ऐतिहासिक जानकारी) न होते हुए भी हम यही कह सकते है क़ि उनकी रचनाएँ ही एकमात्र ऐसा स्रोत है, जिनके कारण कालिदास को विश्व साहित्य में उच्चकोटि का कवि कहा जा सकता है। संस्कृत काव्यो के टीकाकार मल्लिनाथ ने उनकी रचनाओं के संबंध में इस प्रकार कहा है "कालिदासगिरां सार कालिदास: सरस्वती। चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशा:।। (शास्त्री १०) (अर्थात कालिदास की रचनाओं का सार अधावधि मात्र तीन ही हृदयगम कर पाये है:- एक चतुरानन ब्रह्मा, दूसरी वाग्देवी सरस्वती तथा तीसरे स्वयं कालिदास। मेरे समान अल्पज्ञ तो उन्हें समझ पाने में असमर्थ ही रहे है। (शास्त्री १०) इस प्रकार की विशेषताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कालिदास की रचनाएँ सरल, सरस, तथा सुबोध होते हुए भी गंभीर अवं दार्शनिक भावों से ओत-प्रोत थी। वैसे तो कालिदास की इकतालीस रचनांए है, लेकिन उनकी सात रचनांए (तीन नाटक + दो गीतिकाव्य + दो महाकाव्य) ही मुख्यता मानी गई है, बाकी की रचनाओं के विषय में अभी भी विद्वानो और शोध छात्रों में समस्या का विषय बना हुआ है। उनकी सातो रचनांए ही उनके जीवन पर सम्यक प्रकाश डालती है, जिनमे से उनकी रचना "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" ही विश्व साहित्य में सर्वेश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि कहलायी है, जिसके संबंध में ये प्रसिद्ध सूक्ति इस प्रकार है:-"काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शंकुतला"। (४.२) (शास्त्री १६) अर्थात नाटकों में सबसे सर्वोत्तम नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् माना गया है। जर्मन विद्वान गेटे (Goethe) दवारा अभिज्ञानशाकुन्तलम् की प्रसंशा में कहे गये शब्द इस प्रकार है-

Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline
And all by which the soul is charmed, enraptured, feasted, fed,
Wouldst thou the earth and heaven itself in one sole name combine?
I name thee, O Sakuntala! and all at once is said (मिराशी 249)

इस अंग्रेज़ी पद्य का संस्कृत रूपान्तर इस प्रकार है -
वासन्तं कुसुमं फलं च युगपद् ग्रीष्मसय सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमत: संतपर्णम् मोहनम्
एकीभूतमपूर्वरम्यथवा स्वलोर्केभूलोकयो
रैश्रथ यदि वांछसि प्रियसखे शांकुतलं सेव्यताम (मिराशी 249)

महाभारत के आदिपर्व से ली गई इस नाटक की मूल कथा इसी बात का स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत करती है कि, इसमें कवि की काव्य-प्रतिभा और मानवीय-संवेदनाओ का जो उत्कृष्ट-चित्रण प्रस्तुत हुआ है वह अत्यंत ही सहृदय है। सात अंको में विभाजित, कालिदास की ये रचना दुष्यंत तथा शंकुतला के प्रेम, विवाह, विरह, प्रत्याख्यान तथा पुनर्मिलन की एक ऐसी प्रेमकथा है, जो प्रकृति एवं पर्यावरण तथा मानवीय-संवेदनाओ का चित्रण प्रस्तुत करती है। इस कथा का चतुर्थ अंक सर्वोत्तम कहा गया है, क्योकि इसमें शंकुतला की विदाई का मार्मिक वर्णन हुआ है, और अन्य विशेषता यह भी है कि इसमें कालिदास ने प्रकृति के माध्यम दवारा शंकुतला के वन से चले जाने पर पेड़-पौधों, फूलों, तथा पत्तों को निराशाजनक स्थिति में भी सकारात्मक भावो का एक सुन्दर उदाहरण देकर इस प्रकार प्रस्तुत किया है- "उदीर्णदर्भकवला मृगी परित्यक्तनर्तना मयूरी। अपसृतपाण्डुपत्रा मुचंति अश्रु इव लता:"।। (४. १४) (शास्त्री २११) (हरिणी अपने मुख से कुश का ग्रास उगल रही है, मयूरी ने नाचना बंद कर दिया है और पीले पत्तों के बहाने से मानो लताए आंशू बहा रही है) (शास्त्री २१०) इस प्रकार प्रथम से सप्तम अंक तक कालिदास ने दुष्यंत एवं शंकुतला की प्रणय-कथा का वर्णन विरह, विवाह, तथा पुनर्मिलन दवारा चित्रित किया है, जो पर्यावरण सिद्धांत के पहलुओं जैसे पारिस्थितिक तंत्र, पारिस्थितिक तथा प्रकृति एवं मनुष्य के बीच आपसी संबंध को दर्शाता है- "क्षोमं केनचिदीन्दुपाण्डुतरुणा मांगल्यमाविष्कृतम् /निष्ठयूत/ श्ररणोपपरागसुभगो लक्षारस: केनचित। / अन्येभ्योवनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्तिथतै / र्दतान्याभरणानि न: किसलयचछायापरिस्पदिर्भि"।। (४. ७) (शास्त्री २००) इस श्लोक में महाकवि कालिदास ने शंकुतला के श्रृंगार के लिए जिन फूलों और वृक्षों का वर्णन किया है, वह अत्यंत ही स्वाभाविक है, जोकि प्रकृति के दवारा मानवीय भावो का उल्लेख करता है- (किसी वृक्ष ने चन्द्रवत् शुभ मांगलिक रेशमी वस्त्र उत्पन्न करके दिये, किसी वृक्ष ने पाँव रंगने के लिए अत्यंत सुन्दर महावर निकालकर दिया और इसी प्रकार अन्य वृक्षों ने मणिबंध प्रदेश तक बाहर निकले हुए पल्लवों के समान सुन्दर वनदेवताओ के हाथों से हमे ये आभरण आदि समर्पित किये) (शास्त्री २००)

कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में एक तरफ तो कवि की प्रतिभा दवारा श्रृंगार रस के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का सजीव-चित्रण मिलता है तथा दूसरी तरफ प्रकृति एवं पर्यावरण के दवारा सामाजिक गतिविधियाँ, पुरुष का प्रकृति के साथ संबंध, संस्कृति, पशु-पक्षी, तथा पर्यावरण की सुंदरता आदि का उल्लेख बहुत ही सुन्दर ढंग से हुआ है, अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक के चतुर्थ श्लोक में कालिदास ने शिरीष फूलो की उपयोगिता का वर्णन करते हुए कहा है- "ईषदीषच्चुम्बितानी भ्रमरै: पश्य सुकुमारकेशरशिखानी।/ अवतं दयमाना: प्रमदा: शिरीषकुसुमानि"।। (१. ४) (शास्त्री ६) इस श्लोक के उल्लेख में शिरीष वृक्षों के पुष्पों का प्रयोग युवतियां अपने आभूषण के लिए कर रही है और दूसरी जगह पर कवि ने वृक्षों और फूलों की उपयोगिता को निर्दिष्ट करते हुए कहा है- "पिता कण्व (शंकुतला का पिता, प्रथम अंक में) को ये आश्रम के वृक्ष तुमसे भी बढ़कर प्रिय है। इसलिए उन्होंने ये नवीन मालिनी के फूलों से भी कोमल तुम्हे इनके थाले भरने के लिए नियुक्त किया है" (शास्त्री २५) इस प्रकार कवि कालिदास ने जगह-जगह पर प्रकृति और पर्यावरण से जुडी हुई हर प्रकार की विषय-वस्तुओं का उल्लेख बड़े ही गूढ़ ढंग से किया है।कालिदास का प्रकृति के प्रति प्रेम तथा नारी-सौन्दर्य के प्रति विशेष आकर्षण था। वे काव्य-सौन्दर्य के उपासक तथा प्रकृति के प्रेम-पुजारी थे। उन्होंने शंकुतला की प्रशंसा को विभिन्न रूपों में उल्लेख किया है, जैसे कही पर शंकुतला की सुंदरता, तो कही पर प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति विशुद्ध प्रेम, तो कही पर आदर्शवादी सवेंदनशीलताओ के दवारा उनका मार्मिक वर्णन किया है। दूसरे अंक के ग्यारहवे श्लोक में कवि ने शंकुतला की सुंदरता का वर्णन प्रकृति के साथ करते हुए इस प्रकार कहा है-

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलून कररहै
रनामुक्तम् रत्नम् मधु नवमनास्वादितरसम।
अखण्डं पुण्यानां फलामिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति भुवि।। (२.११) (शास्त्री ९१)

इसमें कवि ने शंकुतला की सुंदरता को व्यक्त करत्ते हुए कहा है कि-वह बिना सूंघे हुए फूल की भाँती की तरह है, नाखूनों से बिना तोड़े हुए पत्तों की तरह है जिसका किसी ने स्वाद ही नही लिया वह ऐसे अखण्ड फल की भाँति है, पता नही विधाता ने उसे भोगने वाला किसे बनया है। इस प्रकार कवि ने पर्यावरण एवं प्रकृति के माध्यम दवारा प्रकृति एवं संस्कृति तथा सामाजिकता का भी उल्लेख किया है।

कालिदास अलंकारवादी, रसवादी तथा प्रकृतिवादी होने के साथ-साथ "उपमा" की लक्षणताओं में भी विशेष कुशलता प्राप्त थी। उन्होंने "शांकुतलं" में जगह-जगह पर सुन्दर उपमाओं का वर्णन किया है, जो अन्य किसी कवि की रचना में देखने को नही मिलता है। उपमा कौशल उनकी काव्य -प्रतिभा का एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है। कवि ने व्याकरण, दर्शन, व उपनिषदों से विविध प्रकार की उपमाए ली है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कालिदास ने शंकुतला के रूप को अतिमानवीय बताते हुए कहा है- "मानुषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य संभव:।/ न प्रभातरत्नम ज्योतिरुदेति वसुधतलात"।। (चौधरी ४८) इस प्रकार की अनेक उपमाओं से रचित यह नाटक कवि की प्रतिभा का उल्लेख करता है तथा शाकुंतलम का चतुर्थ अंक काव्य-सौंदर्य, चित्र एवं प्रकृति-वर्णन तथा उपमाओं का विशुद्ध रूप से वर्णन करता है-

पातुम न प्रथमं व्यवस्यति जलंयुष्मा स्वसिक्तेषु या
नादते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम।
आदौ व: कुसुमप्रवृतिसमये यस्या भवत्युत्स्व:
सेयं याति शंकुतला पतिगृह्य सर्वेरनुघायताम्।। (४.११)
(शास्त्री २०७)

कालिदास के ये लाइने उसको प्रकृतिवादी कवि होने में पूरा सहयोग प्रदान करती है, इस श्लोक में शंकुतला के अपने पति के घर जाने के वर्णन को कालिदास ने प्रकृति व मानवीय संबंधो के दवारा सजीव चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहता है- जो शंकुतला तुम्हारे जल पीने के बाद ही स्वयं जल पीती थी, तुम्हारे लाल-लाल कोमल पत्तों को नही तोड़ती थी, तुम्हारे फूलने-फलने पर ही उत्सव मनाती थी। इस प्रकार की विशेषताओं से ओत-प्रोत कवि का यह श्लोक पर्यावरण एवं प्रकृति का आधारभूत पहलू माना जाता है, या फिर यो कहे कि शंकुतला प्रकृति की पुत्री थी, जिसके कारण उसका लगाव पेड़-पौधों और फूलों से भलीभाँति था। इस प्रकार की शांकुतलम की विशेषताए पर्यावरण-सिद्धांत को दर्शाती है। इसी प्रकार का एक अन्य श्लोक उनके विदाई के वर्णन को प्रस्तुत करता है-

रम्यांतर: कमलिनीहरितै: सरोभि:
छायाद्रुमैनियमितार्कमरीचिताप:।
भूयात् कुशेशयरजोमृदुरेणुस्या:
शान्तानुकूलपवनशच शिवशच पन्था:।। (४.१२) (शास्त्री २०८)

इस श्लोक में भी कमल के पत्ते, फूल, वायु आदि के द्वारा शंकुतला के कल्याणकारी मार्ग की प्रार्थना की गई है। इस प्रकार कालिदास ने तपोवन की लताए, फूल-फल, पेड़-पौधों तथा प्रकृति एवं संस्कृति की उपयोगिता का जो संबंध बतया है, वही पर्यावरण सिद्धांत के मूलभूत तत्वों को बढ़ावा देता है, इसी प्रकार की मौलिक विशेषताए उसके छठे अंक में भी है- "कार्या सैकत लीन हंसमिथुना स्त्रोतो वहा मालिनी,/ पादास्तमभितो निषण्ण चमरा गौरी गुरो पावना:। / शाखा लम्बित वल्कलस्य च तरो निर्मातु मिच्छा मयध:,/ श्रृंगे कृष्ण मृग स्य वामनयनं कण्डूयमानाम् मृगीम्"।। (६.१९) (शास्त्री ३३७) इसमें राजा विदूषक को एक चित्र बनाने के लिए कहता है, जिसमे मालिनी नदी, हंसो के जोड़े, हिमालय पर्वत की गुफाए, चमरी मृग, शाखाओं पर लटके हुए वल्कल वृक्ष आदि विशेषताओं का उल्लेख करता है।

इसके अतिरिक्त कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् की प्रमुख विशेषता यह है कि इसकी कथा वस्तू मौलिक है और व्यंजना शक्ति के दवारा इस पूरे नाटक को चित्रित किया है कहीं पर कोई भी घटनाएं, पात्र, तथा प्राकृतिक दृश्य निष्प्रयोजन नही है। प्राकृतिक दृश्य ही उनके काव्य की विशिष्टता है क्योकि कवि की दृष्टि में "मानवीय सौंदर्य का मापदंड प्राकृतिक सौंदर्य था" (शास्त्री १२) विलियम वर्ड्सवर्थ की तरह कालिदास ने भी अपनी कविताए समान्य लोगो के लिए लिखी क्योकि दोनों ही विद्वान प्रकृति के प्रेमी थे दोनों ने ही अपने सच्चे भावों को प्रकृति के माध्यम द्वारा स्पष्ट करने कोशिश की है, जहां इंसान प्रकृति पर निर्भर करता है, वर्ड्सवर्थ की एक कविता- "The Ruined Cottage" से एक उदाहरण इस प्रकार है- "At length towards the cottage I returned; and traced/ Fondly, though with an interest more mild,/ That secret spirit of humanity/ Which, mid the calm oblivious tendencies/Of nature, mid her plants, and weeds, and flowers,/And silent over growings, still survived" (Gill 43).

इसी प्रकार की पर्यावरण एवं प्रकृति की विशेषत्ताओ पर अभिज्ञानशाकुन्तलम् में जोर दिया है, शाकुन्तलम् के छठे अंक के प्रसंग में कञ्चुकी बोलता है- हुँ न किल श्रुतं भवतीभ्याम् यदासंतैस्तरुभिरपि देवस्य शासनं प्रमाणि कृतं तदाश्रयिभिच। तथाहि- (क्या तुम दोनों ने सुना नही कि वसन्तकाल के वृक्षों और उनके आश्रित पक्षियों ने महाराज की आघा का पालन किया है) (शास्त्री ३०३)

चुतानाम् चिरनिर्गतापि कलिका बध्नाति न स्वं रजं
संन्द्य यदपि स्थितं कुरुवकं तत कोरकवसथ्या।
कण्ठेषु स्खलितं गतेअपि शिशिरे पुंस्कोकिलानाम् रुतम्
शंके संहरति स्मरोअपि चकितस्तुणा र्दकृष्टम् शरम ।। (६.३)
(शास्त्री ३०३)

इसके आगे भी कवि दुष्यंत एवं शंकुतला के द्वारा प्रकृति के गुणों का व्याख्यान करता है जो पर्यावरण सिद्धांत के पहलुओं (aspects of ecocritical theory) का निरीक्षण करता है। कालिदास विभिन्न प्रकार के वृक्षों का वर्णन शाकुन्तलम् में करते हुए उनकी उपयोगिता को भी दर्शाता है, जैसे कुरबक, कल्पवृक्ष, कमल, पराग पुष्प, तथा तपोवन की लताए इत्यादि, जिनका महत्व आज के अध्यात्मिक और भौतिकवादी युग में भी देखने को मिलता है। शाकुन्तलम् के अंतिम अध्याय में राजा मातलि पूछता है कि- प्रजापति कश्यप का आश्रम कहा है, तो उसके उत्तर में मातलि कहता है- जहां के मंदार वृक्ष को अदिति ने अपने हाथों से सींचकर बड़ा किया है, यह वही प्रजापति का आश्रमहै- "वल्मीकार्दनिमन्नमूर्तिरुरगत्वगब्रह्मसूत्रांतर:/ कण्ठे जीर्णलताप्रतापनवलयेनात्यर्थसंपीड़ित: / असंव्यापि शंकुन्तनीडनिचितं बिभ्रज्जटामण्डलं।/ यत्र स्थाणुरिवाचलो मुनिरसावभ्यर्कबिम्बम स्थितः"।। (७. ११) (शास्त्री ३८५)

इन सब प्रकार के गुणों की विशेषताओं यही स्पष्ट होता है कि कालिदास ने

जितना भी वर्णन प्रकृति के दवारा "शाकुन्तलम् नाटक" का किया है वह सब शुद्ध व स्पष्ट तथा मौलिक है, और जिसका महत्व पर्यावरण की दृष्टि से सर्वोपरि है।

संदर्भ सूची

1. चेरील ग्लोटफेल्ती, और हरहोल्ड फोम, दा इकोक्रिटिसिज्म रीडर: लैंडमार्क्स इन लिटरेरी इकोलॉजी, जॉर्जिया: यूनिवर्सिटी प्रैस, १९९६
2. लॉरेन्स बुल, दा एनवायर्नमेंटल इमेजिनेशन: थोरो नेचर राइटिंग एंड दा फोरमेशन ऑफ़ अमेरिकन कल्चर, इंग्लैंड: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, १९९५
3. डॉ वेद प्रकाश शास्त्री, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन, २०००
4. डॉ अर्कनाथ चौधरी, मेघदूतम्, जयपुर: जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, २००४
5. स्टीफन गिल, विलियम वर्ड्सवर्थ दा मेजर वर्क्स: इन्क्लूडिंग दा प्रील्यूड, न्यूयॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, १९८४
6. ग्रेग गेरेड, इकोक्रिटिसिज्म, यू. एस. ए: रूटलेज, २०१२
7. वासुदेव विष्णु मिराशी, कालिदास: डेट, लाइफ, एण्ड वर्क्स, बॉम्बे: पॉपुलर प्रकाशन, १९६९
8. अथर्वेवेद् (१.१२/१२)
9. ऋगवेद